रहस्य और रोमांच से भरपूर कला– बॉडी पेन्टिंग

डॉ0 रवीश कुमार
ऐसो0 प्रोफे0, ललित कला विभाग,
एम. एच. पी. जी. कॉलेज, मुरादाबाद.
Email:71ravishik@gmail.com

Reference to this paper should be made as follows:

डॉ0 रवीश कुमार,

रहस्य और रोमांच से भरपूर कला– बॉडी पेन्टिंग,

Artistic Narration 2019, Vol. X, pp.50-58

http:// artistic.anubooks.com/

सारांश

*कला मानव जीवन का वह स्वतंत्र पहलू है जो जीवन को सही मायने में सार्थक बनाता है। इसी सार्थकता की तलाश ने ही कला का क्षेत्र काफी विस्तष्त कर दिया है। कला अब किसी बन्धन में बँधकर नहीं रह गई। वह पूर्ण रूप से स्वतंत्र हो गई है। वह अपने परम्परागत दायरे से बाहर निकलकर नई–नई पौध को जन्म दे रही है अर्थात् आज नई–नई कलाएं उभरकर सामने आ रही हैं। '**बॉडी पेंटिंग**' ऐसी ही एक कला है। बॉडी पेंटिंग अर्थात् मानव के शरीर की त्वचा पर किया गया चित्रण कार्य या मेकअप, जिससे वास्तविक शरीर के स्थान पर नया और भ्रमित रूप दिखाई दे।*

प्रस्तावना

इसमें कलाकार अपनी अभिव्यक्ति के लिए पूर्ण रूप से स्वतंत्र होता है। वह शरीर के किसी खास भाग जैसे– चेहरा, गर्दन, कंधे, बॉह, कलाई, हाथ, अंगुलियां, छाती, पेट, पीठ, कमर, जांघ, पैर, पैर की अंगुलियों को चुने या पूरे शरीर को अपनी अभिव्यक्ति का कैनवास बनाये। वह चाहे शरीर के किसी एक भाग पर या पूरे शरीर पर चित्रण कार्य कर सकता है। आनन्द की अनुभूति के लिए वह नग्न या अर्द्धनग्न शरीर का चयन भी कर सकता है। उसका उद्देश्य मानव के शरीर को चित्रांकन के द्वारा बाहरी सौन्दर्य प्रदान करना तो है ही, साथ ही अभिव्यंजक, व्यवहारिक और आवश्यक भी हो सकता है। यह एक अस्थायी कला है जो कुछ ही समय या कुछ दिन के लिए ही रहती है। अस्थायी होने के कारण शरीर रूपी कैनवास को पुनः प्रयोग में भी लाया जा सकता है। इसे स्त्री–पुरूष या बच्चे किसी भी विशेष कार्य या प्रदर्शन के लिए बनाते या बनवाते हैं। यह कलाकार की अभिव्यक्ति को व्यक्त करने का एक शानदार तरीका है। वैसे तो गोदना, मेहन्दी, महावर, नेल पेंट, टैटू, काजल, बिन्दी, मेकअप आदि शरीर पर चित्रकारी के विविध रूप हैं, किंतु हम यहाँ चर्चा बॉडी पेंटिंग अर्थात् शरीर पर की जाने वाली चित्रकारी या मेकअप के द्वारा किया जाने वाला चित्रण कार्य ही कर रहे हैं।

भारतीय प्रारम्भिक बॉडी पेंटिंगका एक रूप

आज–कल मेले, उत्सव या खेल के मैदान में अक्सर हम देखते हैं कि कुछ लोग अपने शरीर पर चित्र बनाकर या बनवाकर अपनी अभिव्यक्ति का प्रदर्शन करते नजर आते हैं, तो कुछ लोग फैशन के लिये शरीर पर चित्र बनाते या बनवाते हैं। शरीर को चित्रों से सजाने की यह परम्परा फैशन का तो रूप है ही, कभी–कभी ये मानवीय जुनून को भी दर्शाती है। मानव अपने शरीर के प्रति प्रारम्भ से ही बड़ा सचेत रहा है। वह चित्रों के माध्यम से उसे सजाता–संवारता रहा है। अपने शरीर को सजाने की यह परम्परा प्राचीन काल से ही चली आ रही है और आज के दौर में तो ये फैशन के चर्मोत्कर्ष पर है।

यूं तो यह कला कोई नयी नहीं है। अगर इतिहास के पन्नों को पलट कर देखा जाए तो इसके प्रमाण हजारों वर्ष पुराने मिल जाते हैं, किन्तु इसे स्वतंत्र कला के रूप में पहचान 19वीं सदी में जाकर

मिली। हां इतना जरूर है कि पहले की अपेक्षा अब इसका रूप बदला है, दायरा बदला है और तरीका भी बदला है। जहाँ पहले शरीर पर चित्रण के लिए गेरू, खड़िया, हल्दी, चन्दन, कुमकुम, मिट्टी या अन्य रंगीन प्राकृतिक पदार्थ प्रयोग किये जाते थे, वहीं अब इन प्राकृतिक रंगों के साथ ही बने बनाये तैयार रंग भी विभिन्न सुख–सुविधाओं के साथ प्रयोग किये जाते हैं, जो धोने में आसान होते हैं। बाजार में मेकअप की तो पूरी की पूरी रेंज आसानी से मिल जाती है, जिसे सरलता से लगाया और कार्य पूरा होने पर साफ किया जा सकता है।

बॉडी पेंटिंग का एक अन्य रूप 'नेल आर्ट'

प्रारम्भ में यह कला आदिवासियों व कबीलाई संस्कषति में अधिक प्रचलित थी। वे लोग धार्मिक अनुष्ठानों, उत्सवों या विवाह–समारोह आदि में अपने चेहरे या शरीर को प्राकृतिक रंगों या मिट्टी से विभिन्न आकृतियों द्वारा सजाते थे। उदाहरण के लिए स्त्रियाँ हाथों में मेंहदी और चहरे पर कुमकुम या चन्दन की बिन्दी लगाती थीं, तो साधु पुरूष हल्दी, चन्दन या मिट्टी से मस्तक को सजाते थे। धीरे–धीरे शरीर को चित्रों से सजाने की परम्परा समस्त विश्व में लोकप्रिय हो गयी और अब तो फैशन तक पहँच गई।

आज–कल इसका चलन आम तौर पर देखा जा सकता है। खेल के मैदान में दर्शक टीम की सपोर्ट के लिए अपने चेहरे को फेवरेट टीम के रंगों में रंगे हुए हों या फैशन–शो में रंग–बिरंगे चेहरे या टैटू के रूप में, सर्कस का लाल–सफेद रंग में पुता **जोकर** हो या नाटक–रंगमंच में विभिन्न पात्रों के रूप धारण किए अभिनेता, गीत–संगीत, नृत्य में हरे, लाल, सफेद, पीले रंगों में रंगे कथककली जैसे नर्तक हों या मेले–उत्सवों में वानर–लंगूर, देवी–देवता बने पात्र, झांकी–शोभायात्रा में राम–लक्ष्मण, रावण, हनुमान, राधा–कृष्ण, शिव, काली के रूप में कलाकार हों या फिल्म–टेलीविजन में विविध प्रसिद्ध चरित्रों का अभिनय करते अभिनेता या फिर शादी–समारोह, तीज–त्यौहार में हाथ–पैरों की डिजाईनर मेंहदी हो या नेल पेंट आदि इसके सशक्त उदाहरण हैं।

भारतीय बॉडी पेंटिंग(राधा–कष्ष्ण के रूप में कलाकार)

इसमें लोग अपने चेहरे, हाथ या पूरे शरीर पर किसी जानवर जैसे–हाथी, घोड़े, शेर, कुत्ते, बिल्ली, अजगर, आदि, पक्षी, कीट–पतंगे, फूल–पत्ती, पेड़–पौधे या किसी व्यक्ति विशेष का चित्रण बड़े चाव से करवाते हैं। इसमें चेहरा चित्रकारी और हाथ चित्रकारी विशेष महत्व रखते हैं, जिन्हें विभिन्न पशु–पक्षी, प्राकृतिक वस्तुएं या किसी विशेष व्यक्ति आदि का रूप दिया जाता है या कभी–कभी शरीर को आस–पास के बाहरी परिवेश या प्राकृतिक वातावरण में इस तरह रंग दिया जाता है कि पूर्ण शरीर अदृश्य सा प्रतीत हात है। यह बच्चों के बीच अधिक लोकप्रिय है। मनोरंजन पार्क, खेल के मैदानों, सर्कस, नाटकों आदि में चेहरे को किसी जानवर, परी, सुपर हीरो, कार्टून, डरावने राक्षस, तितलियों, पक्षियों आदि का सुन्दर रूप चित्रित किए हुए चेहरे देख बच्चे बहुत खुश होते हैं।

बच्चे ही नहीं आजकल तो सभी उम्र के स्त्री–पुरूषों में इसका असर देखने को मिल जाता है। खेल के मैदान से लेकर तीज–त्यौहार या उत्सव–समारोह तक में कलाकार अक्सर अपने कार्यों और प्रदर्शन में बॉडी पेंटिंग का उपयोग करते हैं। कभी–कभी तो इसके माध्यम से विशेष संदेश भी देते हुए नजर आते हैं।

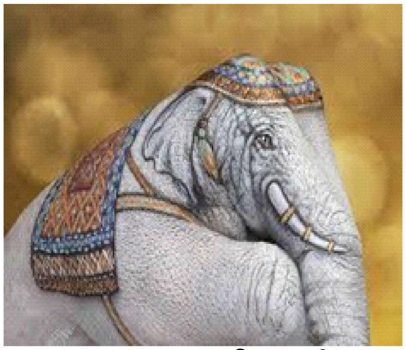

हाथ पर चित्रकारी

बॉडी पेंटिंग का फैशन भारत ही नहीं पाश्चात्य देशों में काफी पहले से चला आ रहा है। समय परिवर्तन के साथ वहां इसके रूप में भी परिवर्तन आया। वर्तमान में अगर देखा जाये तो यहां की अपेक्षा वहां की बॉडी पेंटिंग या मेकअप हमसे बहुत आगे हैं। पाश्चात्य कलाकारों ने तो इसमें नये–नये प्रयोग कर इसको फिल्मी दुनिया के समान रहस्य, रोमांच से भरपूर आकर्षक और सौन्दर्यमयी बना दिया है। वे मानव शरीर पर रंगों की सहायता से कुछ अद्भुत आकृतियाँ कुछ इस प्रकार बनाते हैं कि मानो वे शरीर नहीं बल्कि वही आकृति है। जैसे यदि हाथ को रंग कर साँप का रूप दिया है तो वह वास्तविक साँप जैसा प्रतीत होता है। जहां एक ओर भारतीय कलाकारों के विषय धर्म या प्रकृति के आस–पास दिखाई देते हैं, तो वहीं पाश्चात्य कलाकारों की कला के विषय प्रकृति के हैरान कर देने वाले बिल्कुल नये रूपाकार हैं।

Turne Humans की एक कलाकृति

फैशन की दौड़ में शामिल ये कलाकार बहुत प्रयोगवादी हैं। वह अपनी कला के माध्यम से शरीर को न जाने क्या से क्या बना दें इसकी आप और हम कल्पना भी नहीं कर सकते। मेकअप या रंगों से क्या–क्या किया जा सकता है ? यह आपने कभी सोचा भी नहीं होगा। ऑस्ट्रेलिया के ब्रेसवैन की मेकअप आर्टिस्ट Geargina Ryland ने बॉडी आर्ट को एक नयी दिशा प्रदान की। उसने अपने शरीर को इस तरह से पेंट किया जिसे देखकर कोई भी नहीं कह सकता कि ये उनका शरीर है या कोई कैनवास। दरअसल उन्होंने पेंटिंग करने के लिए किसी कैनवास का प्रयोग न करके अपने शरीर का चुनाव किया और अपने चेहरे को छोड़कर नीचे के शरीर को पेंट लगाकर पूरी तरह बदल दिया और अपनी कला के बेहतरीन नमूने को सोशल मीडिया पर शेयर भी किया।

इसी तरह पिछले दिनों सोशल मीडिया पर 'ब्रिटेन में रह रही भारतीय मूल की एक मेकअप आर्टिस्ट का फोटो जॉम्बी अवतार वाले भारतीय दुल्हन की वेशभूषा में देखने को मिला जो काफी वायरल हो चुका था। यह फोटो रूपिंदर अशान का था, जो बॉडी पेंटिंग के कारण काफी मशहूर हो गयी और इंस्टाग्राम की सेलीब्रिटी भी बन गयी।'[1]

अपने शरीर को पेंटिंग के द्वारा एक नया खूबसूरत रूप देना आजकल एक फैशन सा होता जा रहा है। ऐसे ही जर्मनी के **जॉर्ज** नामक कलाकार द्वारा बनाया हुआ एक चित्र देखा, जिसके विषय में उन्होंने दावा कर रखा था कि '**जो व्यक्ति इस तस्वीर में छिपी स्त्री को खोज निकालेगा वह अपने आई क्यू लेबल पर गर्व करने का हकदार है और अगर आप लड़की को मात्र 5 सेकेण्ड में देख लेते हैं तो यकीन मानिए आप बहुत स्पेशल हैं।**'[2]

'सोशल मीडिया पर पिछले दिनों एक तस्वीर बहुत चर्चित थी, जिसमें बॉडी पेंटिंग की कला में माहिर एक विदेशी आर्टिस्ट ने स्त्री की टांगों पर जीन्स जैसा कलर कर यह दिखाने की कोशिश की थी कि जैसे उसने वास्तविक जींस ही पहनी है। जीन्स की शक्ल में अपनी रंगीन टांगें लिए वह स्त्री न्यूयॉर्क की गलियों, सड़कों पर घूम आयी लेकिन किसी ने यह नोटिस नहीं किया कि उसकी टांगों में जीन्स नहीं है बल्कि वह सिर्फ रंगी हुयी है।'[3] इसी प्रकार अमेरिका की आर्टिस्ट '**जेन सिडेल**' ने एक मॉडल की बॉडी को पेंट कर उसे मॉल में घूमने का प्रयोग किया जो काफी सफल रहा।

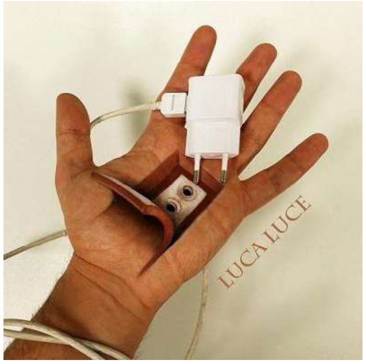

Luvu Luce की एक कलाकृति

इन दिनों तो बॉडी पेंटिंग में हैरान करने वाले बिल्कुल नये रूपाकार व विषय सामने आ रहे हैं, जो बॉडी पेंटिंग जैसी कला में और भी रूचि जाग्रत करते हैं। कुछ कलाकार तो इस कला में भ्रम पैदा करने में माहिर हो चुके हैं। Luca Luce इसी प्रकार के कलाकार हैं, जो अपनी कला से शरीर पर चमत्कारिक प्रभाव उत्पन्न कर देते हैं।

एम्मा हैक की अदृश्य बॉडी पेंटिंग

वास्तविकता का भ्रम पैदा करने वाली यह कला अपनी कलात्मक अभिव्यक्ति के कारण सोशल मीडिया पर काफी चर्चित हो रही है। अपने परिवेश में सम्मिश्रण करने में माहिर विदेशी आर्टिस्ट 'Trina merry' इस पर अपने विचार व्यक्त करते हुए कहती हैं– ''**बॉडी पर पेंटिंग करना सिर्फ एक आर्ट नहीं है, बल्कि यह महसूस करने वाली बात है, इसमें आपको अपने कैनवास से एक खास कनेक्शन महसूस होता है जो आर्ट के किसी और फॉर्म में सम्भव नहीं हैं। आपके इस कैनवास में धड़कन भी है और सांसे भी, इसमें जीवन है।**''[4]

आज के दौर में चित्रों से शरीर को सजाने की परम्परा भारत ही नही उत्तर और दक्षिण अमेरिका, अफ्रीका, ऑस्ट्रेलिया, न्यूजीलैण्ड, पोलीनेशिया, पापुआ, न्यू गिनी, मेलानेसिया, ओशिनिया, चीन, जापान, बुल्गारिया, कोसॉबो आदि अनेक देशों में भी बहुत लोकप्रिय है। इसका प्रचलन अधिकतर किसी खास समारोह या अनुष्ठान आदि पर होता रहा है और हो भी रहा हैं शारीरिक कला प्रदर्शन के लिए अब तो विशेष महोत्सव और समारोह भी आयोजित होने लगे हैं, जो **विश्व बॉडी पेंटिंग** महोत्सव सीनोडन, ऑस्ट्रिया और अमेरिका **शारीरिक कला महोत्सव** न्यूयॉर्क के नाम से आयोजित होते हैं। जिसमें लोग बढ़–चढ़कर हिस्सा लेते हैं। इस तरह के उत्सव या प्रतियोगिताओं में स्त्री–पुरूष शर्मों–हया के पर्दे को छोड़कर बीच सड़क पर नग्न होकर पूरे शरीर पर पेंटिंग करवाते हैं, जिसे बनवाने में 4 से 10 घण्टे तक लग जाते हैं। न्यूयॉर्क में **'बॉडी पेंटिंग डे'** हर साल बनाया जाता है, जिसमें भारी संख्या में लोग हिस्सा लेते हैं और अपने शरीर पर पेंटिंग करवाकर अपनी आवाज को बुलन्द करते हैं। इस तरह के आयोजनों में कलाकार बॉडी पेंटिंग के द्वारा इंसानों की आंतरिक सुन्दरता और अपनी भावनाओं को दूसरे तक पहुंचाते हैं। इन दिलचस्प और नायाब तरीकों से कला और कलाकार को काफी प्रोत्साहन मिलता है।

'न्यूयॉर्क में किसी कार्यक्रम या कलात्मकता के लिए सार्वजनिक रूप से नग्नता को इजाजत है। कार्यक्रम आयोजक **एंटी गोलुब** को इसकी इजाजत मिली थी, जिसमें पुलिस की सहमति भी शामिल थी।' अपनी बेवसाइट ने गोलुब ने कहा है ''कला को सिर्फ कैनवास तक या कैमरे के अन्दर तक महदूद नहीं रखना चाहिए, मेरे लिए कला खुद की खोज करना और उसे लोगों के साथ साझा करना है।''[5] आस्ट्रिया के फ्लेगनफर्ट में भी हर साल जुलाई माह में **'वर्ल्ड बॉडी पेंटिंग फेस्टिवल'** का आयोजन होता है, जो लगातार 1998 से हो रहा है। इसमें अलग–अलग वर्ग के पुरस्कार भी होते हैं। यहां तो मेन 'फेस्टिवल से पहले प्रतियोगिता के लिए चार दिनों की वर्कशॉप और लेक्चर भी होता है।' ऐसे समारोह में लगभग 300 देशों के कलाकार तक हिस्सा लेते हैं, जिसे देखने के लिए 30–35 हजार तक लोग एकत्रित हो जाते हैं।

इस तरह के आयोजन में अपने शरीर पर चित्रकारी करवाने के लिए कोई भी हिस्सा ले सकता है। चित्रकारी प्रकृति या काल्पनिक किसी से भी प्रभावित हो सकती है। 'पाकिस्तानी अभिनेत्री बीना मलिक ने भी फिनलैण्ड के चित्रकार कीविनैन की कला से प्रभावित होकर लंदन में उनसे अपने शरीर पर 5 अलग–अलग आकृतियां बनवायी जो लंदन में काफी लोगों द्वारा पसन्द की गई।'[6]

अपने यहाँ कोलकाता शहर में भी **'बॉडी आर्ट फेस्टिवल'** का आयोजन होता है, परन्तु यह इतना विशाल स्तर का नहीं होता जितना कि आस्ट्रिया, न्यूयॉर्क या न्यूजीलैण्ड का। इसमें हिस्सा लेने वाले कलाकार वहाँ की अपेक्षा कम ही होते हैं और वह भी अधिकांशतः कोलकाता या उसके आस–पास के ही होते हैं। इन आयोजनों में भाग लेने वाले या देखने वाले लोग कम क्यों न हों, परन्तु उनमें उत्साह की कोई कमी नहीं होती और इनमें कलाकारों को भी अपना हुनर दिखाने का मौका मिलता है।

भारत के **प्रदिप्ता घोष**, ऑस्ट्रिया के **पोएर्टेश रे**, इटली के **जोहानेस स्टोएटर**, जर्मनी के **योर्ग डुस्टरवाल्ड**, इतावली के **फिलिपो लोको**, जापान के **चू सान**, चीन के **लियू बोलिन**, अमेरिका के **एलेक्सा मीडे**, न्यूजीलैण्ड के **सोफिया ब्यू** नामक आदि कलाकार बॉडी पेंटिंग में महारथ हासिल कल चुके हैं।

बॉडी पेंटिंग के प्रति इस प्रकार के जुनून को देखते हुए यही कहा जा सकता है कि बॉडी पेंटिंग का फैशन हम पर पूरी तरह हावी हो गया है। हम ही नहीं समस्त विश्व को इसने अपने आगोश में ले लिया है। इसके चंगुल से बाहर निकलना इतना आसान नहीं हैं। अंतर केवल इतना है कि भारतीय जहां विविध प्रकार के आयोजन के लिए इसका प्रयोग करते हैं, तो वहीं बाह्य देशों में खास तौर पर इसके लिए विशेष आयोजन होते हैं।

संदर्भ ग्रंथ

1. (बी0 बी0 सी0, न्यूज किंजल पांड्या की रिपोर्ट)

2. (rom hindi speekingtree.in/ ब्लॉग, तमन्ना, मई–03–2017)

3. वही

4. (https//www bhaskar.com//Anupam Dabral, Shipra Prashar/feb 27,2016,12:49 PM IST)

5. (www.bbc.com / ' जहां है इजाजत नग्न बॉडी पेंटिंग की)

6. (17 अगस्त 2013)(https//m.aajtak.in)

7. उपरोक्त सभी फोटो केवल लेख के भावार्थ को समझने के लिए नेट से लिए गए हैं।